बड़ा, बहुत बड़ा झूठ

बड़ा, बहुत बड़ा झूठ

मैंने झूठ बोला.

एक बहुत बड़ा झूठ.

पिता ने मुझ से पूछा कि क्या मैंने
जार में रखे बिस्कुट खाये थे.

मैंने कहा नहीं.

लेकिन मैंने खाये थे.
और मैंने झूठ बोला.
मैं सच बोल सकता था.
मैं कह सकता था, “मैंने खाये थे.”
लेकिन मेरे पिता बहुत गुस्सा हो जाते.

और माँ भी बहुत गुस्सा हो जाती.

और मेरी बहन भी.

और अब मुझे दुःख हो रहा है कि मैंने क्यों खाये.
और मुझे दुःख हो रहा है कि मैंने झूठ बोला.
और अब मैं अपने झूठ के चक्कर में फंस चुका हूँ.

मैं इससे बात कर सकता हूँ, शायद.
“झूठ, चले जाओ. दूर हटो.
मैं तुम्हें पाँच रुपये दूंगा अगर तुम
कभी वापस न आओ तो.”

वह अभी भी यहीं है.

“देखो, झूठ, मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है और मैं तुम्हें पसंद नहीं करता. और मैं तुम्हें देख भी नहीं पा रहा, इसलिये शायद तुम हो ही नहीं. तुम्हारा अस्तित्व ही नहीं है. झूठ, तुम कुछ नहीं हो. कुछ नहीं हो. कुछ नहीं हो!
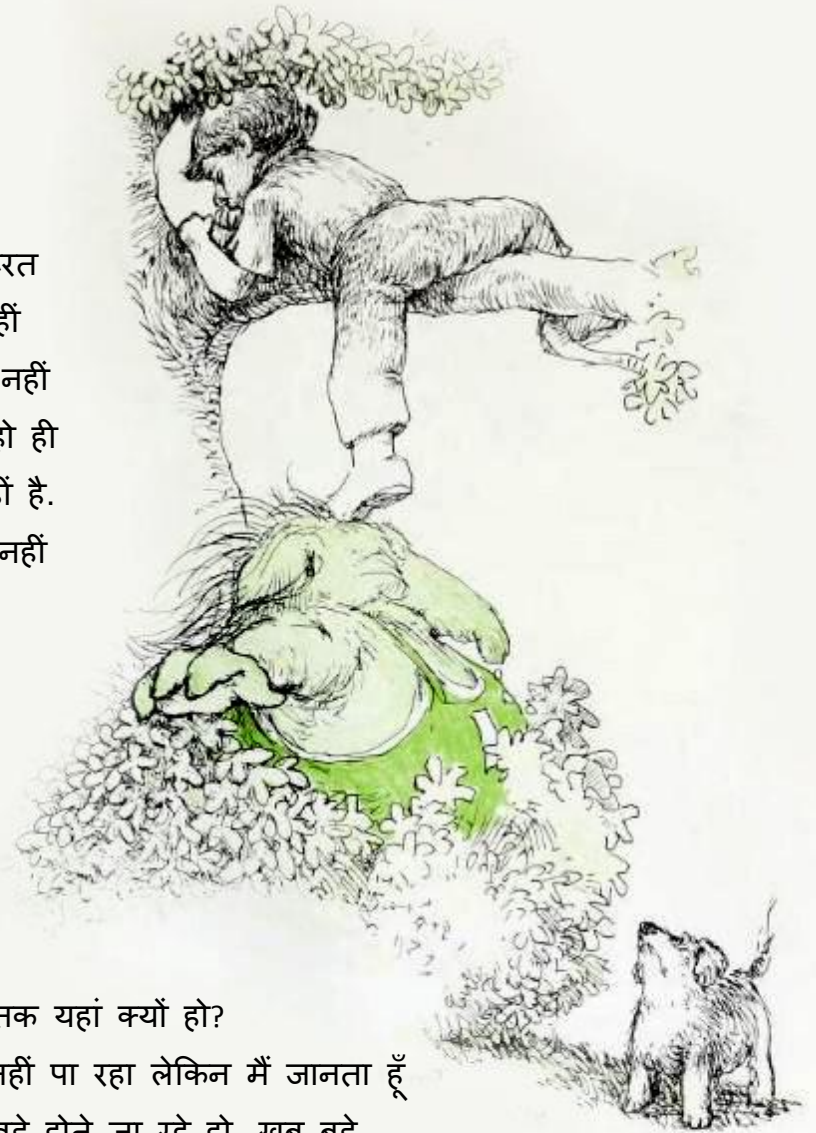
तो तुम अभी तक यहां क्यों हो?
मैं तुम्हें देख नहीं पा रहा लेकिन मैं जानता हूँ
तुम धीरे-धीरे बड़े होते जा रहे हो, खूब बड़े.
झूठ, तुम बहुत बड़े हो गये हो.”

“तुम बहुत विशाल हो, भारी-भरकम हो.
तुम्हारा सिर भी बहुत बड़ा है.

और तुम्हारी नाक बह रही है और पेट फूला हुआ है.
झूठ, तुम बहुत भद्दे हो.”

"और तुम मूर्ख हो. तुम सब से बड़े मूर्ख हो.
मुझे पक्का विश्वास है कि तुम अपना नाम भी नहीं लिख सकते.
प्रयास करो.

झू-ट, जू-ठ, जू-ट, झु-ठ. सब गलत हैं."

तुम्हारा नाम है झू-ठ और तुम मूर्ख हो

और मैं बहुत होशियार हूँ.
लेकिन मैं तुम्हारे चक्कर में कैसे फंस गया.”

“क्या तुम कहीं जाकर किसी और को तंग नहीं कर सकते?
कोई ऐसा जो सच में बुरा और बिगड़ा हुआ हो.
जो मेरे जैसा अच्छा बच्चा न हो.

झूठ, क्या यह तुम हो जो मेरे पेट पर बैठे हुये हो?
मुझे कष्ट हो रहा है. उतरो मेरे पेट से, उतरो.
ठीक है, झूठ मैं हार मानता हूँ.”

“पिता जी! माँ!

मैंने आप से झूठ बोला था. मैं जानता हूँ कि बिस्कुट किस ने खाये थे. कोई ऐसा जिसे मैं बहुत प्यार करता हूँ बिस्कुट खा गया. उसने पहले एक खाया और फिर उसने दूसरा खाया और फिर एक और. इस तरह एक-एक कर जार में रखे सारे बिस्कुट वह खा गया.”

हां, एक तरह से मैं ही सारे बिस्कुट खा गया,
मैं आपका बेटा.

क्या इस बात को लेकर आप कुछ करेंगे,
पिता जी? माँ?”

"आप दोनों इस बात
पर चर्चा करोगे?
ठीक है."
ठीक है!
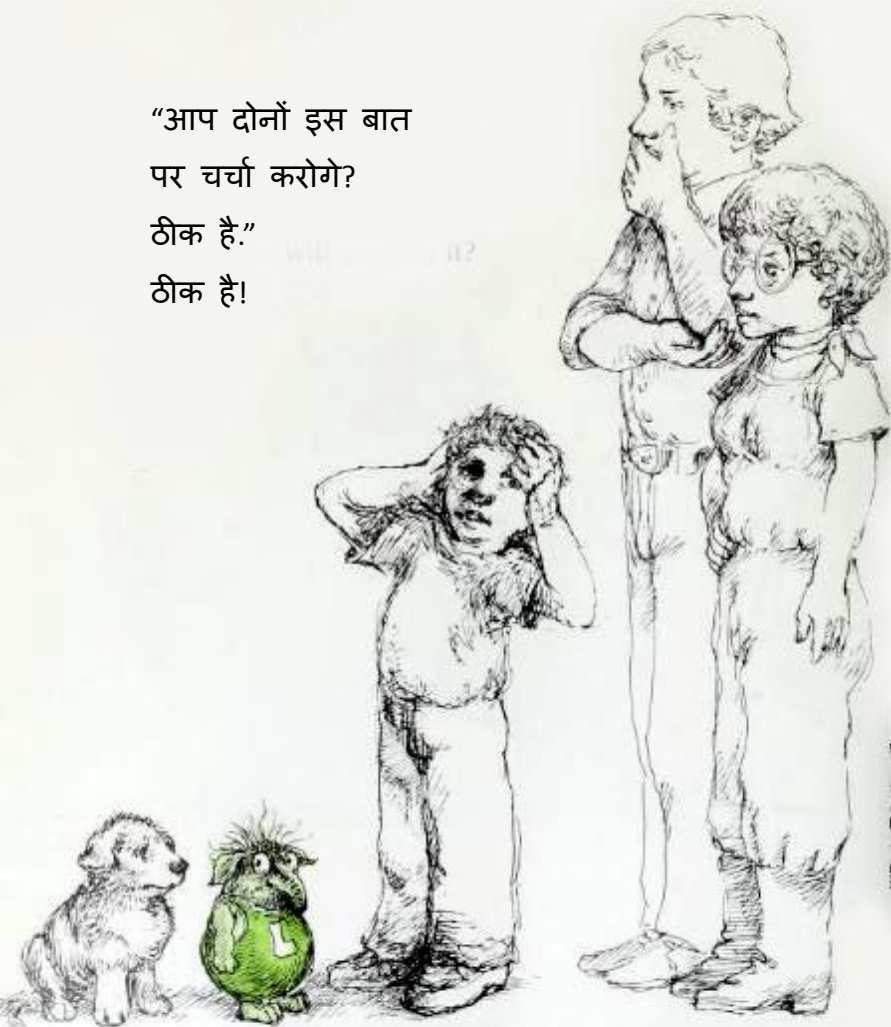
मेरा झूठ जा चुका है. शायद वह चला गया है
किसी और को तंग करने.

शायद अब तक दुनिया के दूसरी ओर पहुंच गया होगा.
शायद किसी महासागर में तैर रहा होगा.

या किसी सागर तट पर फँस गया होगा और प्रतीक्षा कर रहा होगा कि कोई उसे बचा ले.

या किसी बड़े नगर में भटक गया होगा.
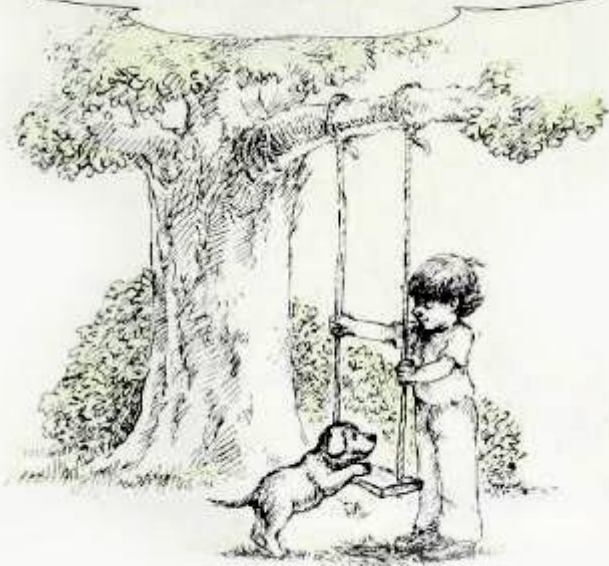
या किसी जंगल में. और सोच रहा होगा कि मुझ जैसे
अच्छे बच्चे को उसे छोड़ना नहीं चाहिये था.
लेकिन वह मेरे पास लौट कर नहीं आयेगा.
अब वह मेरे पास नहीं है.

और यही सच है, पूरा का पूरा सच.

समाप्त